सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का एकादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. वैद्य बनवारी लाल गौड़ द्वारा लिखित 'परमावश्यकं हि पर्यावरणसंरक्षणम्' लेख में वर्तमान युग में पर्यावरण की क्षति को देखते हुए पर्यावरण के आवश्यकता एवं उसके निमित्त पर्यावरण संरक्षण की अपरिहार्यता प्रस्तुत की गयी है। शोधछात्र बालकृष्ण मिश्र द्वारा लिखित 'पर्यावरणीय सन्दर्भे सोमयागस्य वैज्ञानिकता' शीर्षक शोधलेख में यज्ञ एवं पर्यावरण के सम्बन्ध को बतलाते हुए सोमयाग की महत्ता, उपयोगिता एवं वैज्ञानिकता को प्रस्तुत किया गया है। इसी क्रम में गोवर्धन दास बिन्नानी द्वारा लिखित 'त्रिदेवों के अंश भगवान दत्तात्रेय' शीर्ष लेख में दत्तात्रेय के पौराणिक कथानक को प्रस्तुत किया गया है। योगेश्वर आचार्य माधव शास्त्री द्वारा लिखित 'श्रीमद्भगवद्गीता' लेख में गीता की व्यावहारिक शिक्षा का प्रस्तुतीकरण किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा